12/3/21 (1)

~~[illegible]~~

डॉ० अरुणा कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग,
एस०एन०एस० कॉलेज
जहानाबाद

B.A. Part I
Hindi Hons
I Paper
मध्यकालीन हिन्दी काव्य

सूर के पद की व्याख्या —

प्रश्न — सूरदास के प्रस्तुत पद की व्याख्या करें —

जसोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै, दुलराइ, मल्हावै जोइ-सोइ कछु गावै॥
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै॥
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं कबहुँ अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि करि-करि सैन बतावै॥
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नंद-भामिनि पावै॥

उत्तर — व्याख्या — सप्रसंग —

प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास द्वारा रचित है। प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास के सूरसागर में वर्णित है। वहीं से यह पद हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित किया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत पद का प्रसंग है कि यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में झुलाती है। इस आलोक में इसमें बाल प्रकृति का वर्णन किया गया है।

मूल भाव — प्रस्तुत पद में मातृ हृदय के आलोक में वात्सल्य प्रेम का वर्णन किया गया है तथा इसके साथ ही साथ बालकों का व्यवहार एवं उनकी प्रकृति का भी वर्णन है।

क्रमशः —

B.A. II Year (2) 12/3/21
Hindi Hons

सूर के पद की व्याख्या — क्रमशः —
व्याख्या आगे —

भाव - कृष्ण के आलोक में हर माता की तरह यशोदा कृष्ण को पालने में झुला रही है। वह उसे हिलाती है तथा प्रेम से दुलार करते हुए पुचकारती है। कृष्ण को पालने में झुलाने के साथ ही यशोदा के मन में जो भी बातें आती हैं उसे वह गाती है। यशोदा कृष्ण को सुलाने के लिए नींद को बुलाती हुई कहती है कि - रे नींद! तुझे कृष्ण बुला रहा है। तू जल्दी से आ जा और कृष्ण को सुला जा। तू जल्दी से आकर कृष्ण को क्यों नहीं सुला जाती।

कभी-कभी कृष्ण अपनी आँखों को मूंद लेते हैं और कभी अपने होंठ को हिलाने लगते हैं। यह जानकर कि कृष्ण सो गए हैं, यशोदा चुप होकर रहती है तथा दूसरों को भी संकेत से चुप रहने को कहती है। संयोग से बाल सुलभ प्रकृति के आलोक में कृष्ण बीच - बीच में चौंककर जाग जाते हैं तथा यशोदा माता उन्हें मीठी लोरी गाकर सुलाने का प्रयास करती है। हर माता की तरह यशोदा अपने लल्ला को मीठी लोरी गाकर पुनः सुलाती है। यह सोचती है कि मेरे कृष्ण को नींद अभी पूरी नहीं हुई है।

अंतिम पंक्ति में सूरदास कहते हैं कि जो सुख देवताओं और मुनियों को दुर्लभ है, उसे नंद की पत्नी यशोदा सहजता से ही प्राप्त कर रही है।

क्रमशः —